Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Impact Factor : 2.1506(UIF)
Volume-4 | Issue-11 | Dec-2014
Available online at www.isrj.org

भूमंडलीकरण की खतरनाक उड़ान और नई सदी के हिंदी उपन्यास

अजीत कुमार पटेल
शोधार्थी (हिंदी विभाग) , राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय , किशनगढ़, अजमेर.

सारांश- पिछले पच्चीस वर्षों में सामाजिक और आर्थिक चर्चा के रूप में सर्वाधिक प्रभावशाली विषय का केंद्र रहा है - भूमंडलीकरण | अमूमन सही भी है कि आज सम्पूर्ण समाज इसकी जद में है, और इसके लिए भूमंडलीकरण की नीति और नियति अधिकाधिक रूप से जिम्मेदार है | देश की आर्थिक नीतियों पर एक समूह का आधिपत्य हो गया है| भूमिअधिग्रहण क़ानून तथा सेज (SEZ) जैसे हथियारों के प्रयोग से भारत से गरीबी तो नही हटी गरीब जरूर समाप्त होते जा रहे हैं| 'स्पेशल इकानामिक जोन' अब 'स्पेशल एलिमिनेशन जोन' के रूप में परिणत हो चुका है | निश्चित रूप से इस सम्पूर्ण प्रक्रिया से हिंदी साहित्य भी अछूता नहीं है | हमने प्रथम दशक में प्रकाशित कुछ प्रमुख उपन्यासों की सफलता एवं समीक्षा की जो कसौटियाँ बनायी है उनमें भूमंडलीकरण के प्रभाव को प्रमुख माना है |

प्रस्तावना-

बीसवीं शताब्दी का भारत काफी उथल-पुथल का रहा है | इस दौरान औपनिवेशिक शासन और लोकतांत्रिक भारतीय शासन की लगभग बराबर की भागीदारी रही, फलस्वरूप भारत के राजनैतिक,

आर्थिक, सामाजिक परिवेश में व्यापक तौर पर फेरबदल देखने को मिलता है | उल्लेखनीय है कि इस काल के अंतिम दशक तक आते-आते समूचा विश्व सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक दृष्टि से एक ऐसी व्यवस्था का अनुगमन करने लगा जिसे प्रचलित रूप में भूमंडलीकरण कहा जाता है | निश्चित रूप से इस सम्पूर्ण प्रक्रिया से हिंदी साहित्य भी अछूता नहीं है | बात केवल 21 वीं सदी के उपन्यास की करे तो भूमंडलीकरण से प्रभावित उपन्यासों के कंटेंट में एक ऐसा उद्वेलन देखने को मिल रहा है, जिसमें सांस्कृतिक मुठभेड़, छटपटाहट, प्रतिरोध के स्वर, छद्म आवरण का पर्दाफ़ाश, थोथे जीवन मूल्य, अधिकारों का संरक्षण, सब कुछ कह एवं कर गुजरने की तमन्ना आदि का सामंजस्य देखने को मिलता है | हमने प्रथम दशक में प्रकाशित कुछ प्रमुख उपन्यासों की सफलता एवं समीक्षा की जो कसौटियाँ बनायी है उनमें भूमंडलीकरण के प्रभाव को प्रमुख माना है |

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात समूचे राष्ट्रीय परिदृश्य में बदलाव इतनी तीव्र गति से होना प्रारम्भ हुआ कि हम इस परिवर्तन को सहेज भी नहीं पा रहे है | 1990 ई. के आस-पास रशिया का पतन , 1991 ई. में भारत का आर्थिक तनाव और 1992 ई. का बाबरी विध्वंस ये तीन प्रमुख घटनाएँ अपने आप में युग प्रवर्तक और अखिल भारतीय स्तर पर व्यापक प्रभाव डालने के लिए जानी जाती रहेंगी | जाहिर सी बात है इन कतिपय घटनाओं का प्रभाव हिंदी साहित्य पर भी पड़ा | चूंकि विषय भूमंडलीकरण से सम्बंधित है, इसलिए चर्चा का आधार विषय होगा 1991ई. में भारत सरकार द्वारा अर्थब्यवस्था के क्षेत्र में पारित नवीन क़ानून जिसे 'राव मनमोहन नीति' के नाम से जाना जाता है | इस तरह सरकार अब निवेश के क्षेत्र में विदेशी मल्टीनेशनल कंपनियों को खुली छूट देने को विवश थी | मुक्त अर्थव्यवस्था का सूत्रपात हो चुका था | भारत में अब उदारीकरण, बाज़ारीकरण, भूमंडलीकरण जैसी आर्थिक प्रवृतियां पूरी तरह से पाँव पसार चुकी थी | इसके अवदान के रूप में युवा चिंतक अमित कुमार सिंह का मानना है कि " भूमंडलीकरण ने समूचे विश्व में हाशियाकरण को प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया है | राज्यों को नियंत्रित करने वाली जनता की शक्ति पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों और उसके समर्थक लॉबी का अप्रत्यक्ष प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है भले वे किसी देश का राजनीतिक नेतृत्व हो या फिर किसी भी देश का समृद्ध आर्थिक प्रतिष्ठान |"1

भूमंडलीकरण की अवधारणा को स्पष्ट करने से पूर्व इसके शाब्दिक अर्थ को जानना आवश्यक है | 'भूमंडलीकरण' शब्द में 'भू 'का अर्थ होता है - भूमि | और 'मंडलीकरण' का अर्थ हुआ - समाहित करना | अर्थात सम्पूर्ण भूमंडल का एक साथ हो जाना | एक ऐसी परिधि का निर्माण करना जिसमें सीमाओं का बंधन न हो | विभिन्न देश अपनी सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक गतिविधियों को आपसी सहभागिता की दृष्टि से निर्बाध गति से एक दूसरे को प्रभावित करे | कहने का आशय है कि सम्पूर्ण विश्व एक 'वैश्विक गाँव' का आभास कराएं | वैसे तो इस जादू के पिटारे को खोलते समय इस बात की तथाकथित घोषणा की गयी थी कि इस प्रक्रिया के तहत वैश्विक रूप से असमानता में कमी आयेगी | यह संसार में शिक्षा, रोजगार, तथा व्यापार को मजबूती प्रदान करेगा और आपसी

सहभागिता बनेगी, पर वर्तमान परिदृश्य पर दृष्टिपात करें तो यह दावा पूर्णतया खोखला और दोहरा चरित्र का निर्माण करने जैसा है | प्रख्यात बैज्ञानिक प्रो. यशपाल भी भूमंडलीकरण की अपसंस्कृतिकरण से चिंतित नजर आते हैं उनका मानना है कि " भूमंडलीकरण का अर्थ यह नहीं है कि यह सब लोगो के लिए बराबर है| इसमें 'वसुधैव कुटुम्बकम' जैसी बात बिल्कुल नहीं है| भूमंडलीकरण एक ऐसी स्वेच्छाकारी प्रक्रिया है जिसके नियमों का पालन हमें करना पड़ेगा और हम सबको उसके पीछे चलना पड़ेगा| ये यह भी तय करेंगी कि हमारी स्थितियाँ कैसी होगी | उन्हें कैसी होनी चाहिए| आपको अनुकूलित किया जाएगा |"2 भूमंडलीकरण के समर्थक विद्वानों का मानना है कि प्रत्येक स्तर पर प्रत्येक नागरिक को अवसर की समानता रहेगी वहीं दूसरा वर्ग इसे पहली दुनिया द्वारा तीसरी दुनिया के देशों पर थोपा गया प्रभुत्व मानता है |

'रेहन पर रग्घू' वरिष्ठ कथाकार काशीनाथ सिंह का साहित्य अकादमी से पुरष्कृत प्रसिद्ध उपन्यास है | लेखक ने भूमंडलीकरण की त्रासदी तथा समकालीन मनुष्य जो निरंतर एकाकीपन की ओर अग्रसर, का निहायत संजीदगी से चित्रण करने का सफलतम प्रयास किया है | वैश्वीकरण की विद्रूपताओं को टटोलने वाला यह एक लोकप्रिय उपन्यास है | कथाकार ने यह बताने का प्रयास किया है कि किस तरह बाज़ार हमारे गावं घर में घुस चुका है ? किस तरह हमारी चेतना, हमारी संस्कृति को कैप्चर किया जा रहा है ? पूँजी के प्रलोभन, नवधनाढ्य मध्यवर्गीय जीवन और इस प्रकार के मुखौटावादी समाज का जो चित्र खींचा है उसका उदाहरण देखिये- "जिस कंपनी में और जिस कांट्रेक्ट पर अमरीका जाना है, उससे तीन साल में कोई भी इतना कमा लेगा कि अगर उसका बाप चाहे तो गाँव का गाँव खरीद ले | "3 लेखक ने अपने उपन्यास में इस बात की भी घोषणा करते हैं कि गाँवों में शहरों का प्रवेश होकर नई बसी कालोनियों में उपभोक्तावाद और बाजारवाद निरंतर प्रवेश करता जा रहा है | निःसंदेह 'रेहन पर रग्घू' 21 वीं सदी की वास्तविकता का जीता-जागता उदाहरण है |

धूमिल होती इंसानियत और भौतिक चकाचौंध के इस बाजारवादी युग में भूमंडलीय मोनोकल्चर (एकल संस्कृति) एक ऐसे समाज का सृजन कर रहा है जो विचारहीनता से परिपूर्ण है | पश्चिम की विकट भोगवादी प्रवृत्ति ने मानव को न केवल यंत्रित कर रखा है अपितु उसके चेतना विवेक को घर की चहारदीवारी के भीतर कैद कर रखा है | बाज़ार और भोगवादी पूँजी ने समूचे वैश्विक परिप्रेक्ष्य में न केवल राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तन किये अपितु सामाजिक संबद्धता, पारिवारिक संबंद्धता और मानवीय मूल्य में भी व्यापक बदलाव देखने को मिलता है |प्रवासी भारतीयों के सामने उनकी अपनी ही संस्कृति से तादात्म्य न हो पाना और पाश्चात्य संस्कृति से सामंजस्य बैठाने की विवशता ऐसे कई मुद्दों को लेकर लिखा गया रवींद्र कालिया का उपन्यास 'ए.बी.सी.डी.' काफी चर्चित रहा है | पश्चिम की उपभोगवादी संस्कृति से वर्तमान युवा भारतीय का मोहपाश बढ़ता जा रहा है | मनोज कुमार पांडेय का विचार है कि - "भारतीयोंकी दृष्टि में पश्चिम की संस्कृति अप्स्संस्कृति है तो पश्चिम की दृष्टि में भारतीय संस्कृति पिछड़ी हुयी और असभ्य | 'ए.बी.सी.डी.' इन्ही दो विपरीत

सांस्कृतिक छोरों के द्वंद्व की एक सघन झलक पेश करता है |"4 सच पूछा जाये तो भूमंडलीकरण का दोगला चरित्र केवल और केवल जोड़-तोड़ का है | अलगाववाद, सांप्रदायिकता, सामाजिक भेदभाव और तुष्टीकरण के रूप में इनके पास अमोघ अस्त्र होतें हैं जिनको गाहे-बगाहे क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रयोग करते रहते हैं| सामाजिक सम्बंधों का बिखराव, स्वार्थपरक भौतिक जीवन, संदेहात्मक सहअस्तित्व जैसी अवांछनीय प्रक्रियाओं का मानव जीवन में इतनी तीव्र गति से हस्तक्षेप हो रहा है कि समूचा समाज असहाय, बेबस है |

युवा कथाकार रणेंद्र ने अपने उपन्यास 'ग्लोबल गाँव के देवता' में एक ऐसे समाज को केंद्र बिंदु माना है जो आज के दौर का सर्वाधिक शोषित समाज है - आदिवासी समाज | विस्थापन की त्रासदी भूमंडलीय यथार्थ का सबसे बड़ा महाप्रसाद है | विस्थापन की प्रक्रिया से किसी भी समाज का केवल भौगोलिक परिवर्तन ही नही होता, बल्कि उसके साथ ही साथ उस समाज का सांस्कृतिक एवं चेतनागत स्वरुप का भी आमूलचूल परिवर्तन होता है | वास्तव में किसी भी सामाजिक अस्मिता को कालजयी एवं सम्माननीय बनाने के लिए उसकी भाषा व संस्कृति को बचाना अनिवार्य है, क्योंकि सांस्कृतिक पतन सम्पूर्ण समाज को विवेकशून्य बना देता है और इस स्थिति में उसकी अस्मिता पर संकट के बादल मंडराने लगतें हैं | इसलिए जरूरी है कि आदिवासी समाज भी अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए, अपने अधिकारों के लिए जागरूक हों, क्योंकि बिना स्वच्छंद प्राकृतिक वातावरण के आदिवासी समाज की कल्पना करना असंभव है| युवाकथाकार रणेन्द्र ने 'ग्लोबल गावं के देवता' में प्रकृति के साथ आदिवासियों का तादात्म्य स्थापित करने का सफलतम प्रयास किया है - "...अखाड़ा में पर्व-त्यौहार, सरहुल, हरियारी, सोहराय पर रातभर मांदर बजता | रातभर गाँव-गाँव से जवान लड़के जुटते| लड़कियां जुटती| झूमर, जदुरा के बोलों पर रात भर चाँद नाचता | सखुआ और पलाश नाचता| नदी झरना पहाड़ नाचते| एक साथ पूरी प्रकृति नाचती |"5 लेखक ने प्रकृति के साथ आदिवासियों का स्वाभाविक तादात्म्य स्थापित करते हुए उनके अस्मिता को बचाए रखने के लिए प्रतिक्रिया का मिलाजुला रूप प्रदर्शित करते है | उपन्यास में आक्रोश एवं प्रतिरोध की भावना भी है तो कहीं बेबसी, लाचारी व सिसकियों की प्रतिध्वनियाँ भी गूंजती है |

भूमंडलीकरण के दौर में बाज़ार की शक्तियों के माध्यम से पूँजी अपना निर्बाध खेल खेलती है और सामाजिक सरोकारों के प्रति गैरजिम्मेदार होती है| ऐसे संवेदनहीन चरित्र के फलस्वरूप ही भूमंडलीकरण चिंता का विषय है | आज का युग 'नवउदार आर्थिक सैन्य साम्राज्यवाद' का है | भूमंडलीकरण केवल आर्थिक परिघटना नही है, बल्कि इसने मनुष्य को सामाजिक एवं सांस्कृतिक मुद्दे पर पूरी तरह झकझोर दिया है | मनुष्य को कामोडिटी और मुनाफा कमाने का उपकरण बना दिया गया है | प्रभा खेतान का मानना है कि "ब्रांड से निर्मित होता हुआ उपभोक्ता स्वयं में एक ब्रांड बन जाता है - एक भोगा जाता हुआ ब्रांड | इसी प्रवृत्ति को फैशन, रूचि, जीवन-शैली कहा जाता है और उत्तर आधुनिक समाज में इसी के आधार पर सामाजिक भिन्नताएं आधारित होती हैं, जो पहले वर्गीय

समाज और राजनीतिक पक्षधरता से भिन्न हैं |"5 इन्हीं साजिश और शोषण के विरुद्ध जिरह करने में प्रदीप सौरभ प्रमुख हस्ताक्षर है | अपने पत्रकारिता जीवन के अनुभवों में कुछ काल्पनिक एवं गल्प तथ्यों को फेंटकर एक ऐसे दस्तावेज का निर्माण किया जो सोचनीय एवं भरोसेमंद है | 'मुन्नी मोबाईल' में प्रदीप सौरभ ने नई सदी के राजनीतिक दावं-पेंच और भ्रामक स्वप्नों को लेकर समसामयिक परिदृश्य का ऐसा ताना-बाना बुना है कि यह लेखक के यथार्थ अनुभव का एहसास दिलाता है | वास्तव में 'मुन्नी मोबाईल' महानगरीय जीवन की भयानक त्रासदी, भूमंडलीय यथार्थ, समसामयिक सम्बन्ध, नारी सशक्तिकरण आदि का सामाजिक प्रस्तुतिकरण है |

अजय नावरिया अपने समय के जागरुक और सामाजिक विसंगतियों पर पैनी नजर रखने वालें साहित्यकार है | 'उधर के लोग' उपन्यास भारत की जातिव्यवस्था एवं वैवाहिक स्थिति को पुनर्परिभाषित करते हुए संबंधों को वैकल्पिक समरसता के साथ जोड़कर नई सोच एवं नई जगह की नींव रखी | यह उपन्यास पितृसत्तात्मक एवं पूँजीवाद के समर्थक चोंचालेबाजों को कटघरे में खड़े करते हुए वर्तमान सामाजिक व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करता है | बाज़ार की भ्रामक नियति, सांप्रदायिक तनाव, युवा वैचारिक तनाव, नारी जीवन के विभिन्न रूप खासकर एक वेश्या का जीवन को लेकर नावरिया जी बहुत हद तक गंभीर एवं संवेदनशील है | निश्चित रूप से 'उधर के लोग ' उपन्यास स्वागत योग्य है | इस प्रकार भूमंडलीकरण के दौर में जब हर तरफ मानवता विरोधी शक्तियाँ सक्रिय हैं, यांत्रिक संस्कृति और विज्ञापनों का शोर है, बाज़ार की निरंकुशता पूरी तरह से हावी है, वैश्विक गाँव के नाम पर गाँव उजड़ने लगे हैं| भूमंडलीकरण के युग में किसान आत्महत्या और बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा नवसाम्राज्य फैलाने की रणनीति आदि विसंगतियों का भयावह तरीके से चित्रित करने में राजू शर्मा अपने उपन्यास 'हलफनामे' में काफी हद तक सफल हुए है | यह अपन्यास भारत के उन नीति-निर्माताओं पर भी सवाल खड़ा करता है जो हर समय किसान हितैषी होने का डंका पीटते रहते हैं | वैश्वीकरण, उदारीकरण, और बाज़ारतंत्र के मायाजाल को और इस जटिल दुनिया में जीवन जी रहे पात्रों की मनःस्थितियों एवं परिस्थितियों को यथार्थ अभिव्यक्ति देने में अलका सरावगी कृत 'एक ब्रेक के बाद' उपन्यास काफी हद तक सफल हुआ है | दरअसल, इस उपन्यास में वर्तमान परिदृश्य की विभीषिका को लेखिका ने पूरी तन्मयता के साथ वर्णन किया है |

वर्तमान में जहां मानवीय विरोधी शक्तियों ने पूरी तरह से आर्थिक क्षेत्र पर एकाधिपत्य कर रखा है| वहीं सांस्कृतिक उपनिवेशीकरण के माध्यम से साम्राज्यवादी विस्तार नीति की भी नई परिभाषा गढ़ी जा रही है | ठीक ऐसे समय में नई सदी के उपन्यासों का महत्व अधिकाधिक प्रासंगिक हो जाता है | महत्व इस बात का भी है कि चयनित उपन्यासों ने किसी न किसी रूप में बात बोलेगी भेद खोलेगी की अवधारणा को स्पष्ट करने का प्रयास किया हैं | अराजकता, तानाशाही, अपसंस्कृतिकरण, साम्प्रदायिकता, पूंजीवादी चरित्र, तथाकथित विकास मॉडल आदि शोषणकारी एवं असामाजिक प्रवृत्तियों की मुखालफ़त के साथ-साथ एक जागरुक वर्ग का निर्माण करना 21 वीं सदी के

हिंदी उपन्यास का महत्वपूर्ण बिंदु है | मनोहर श्याम जोशी का उपन्यास 'क्याप' जो 2001 में प्रकाशित होता है, बेहद चर्चित रहा है | अपने उत्तर औपनिवेशिक कलेवर में यह उपन्यास पहाड़ की नैसर्गिक छटा से गुजरते हुए मार्क्सवाद की धरातल पर उतरता है | पहाड़ी इलाका कस्तूरीकोट को लेकर इस उपन्यास का आधारस्तंभ तैयार किया गया है, जिसके बारे में लेखक कहता है "प्रशासन और प्रकृति दोनों द्वारा सर्वथा उपेक्षित इस इलाके के लोगो को अपनी बुनियादी से बुनियादी जरुरत के लिए सदा ही जबरदस्त जुगत करनी पड़ी है |"6 मूलतः नवउपनिवेशवाद ही भूमंडलीकरण का बीज रूप है |

ऐसे समय नई सदी के उपन्यास न सिर्फ मानव विरोधी षड्यंत्रों का खुलासा करते हैं बल्कि इन पर करारी चोट भी करते हैं | प्रस्तुत उपन्यासों का उद्देश्य इस रूप में नीहित है कि धूमिल होते मानवीय मूल्यों को संरक्षित किया जाए, संस्कृति, सभ्यता और समाज में समरसता के भाव का संचार हो, पारंपरिक अस्मिता और प्राकृतिक अधिकारों का हनन न हो, साथ ही साथ समतामूलक लोकतान्त्रिक समाज का निर्माण हो | बहरहाल इंतज़ार रहेगा कि यह भूमंडलीकरण आम जनमानस में नई सुबह लेकर आये | निष्कर्षतः वर्तमान सदी के उपन्यास भूमंडलीकरण के प्रतिरोध में खड़े नजर आतें हैं साथ ही साथ मनुष्यता की पक्षधरता लिए हुयें है |

संदर्भग्रंथ सूची-

1- अमित कुमार सिंह, भूमंडलीकरण और भारत : परिदृश्य और विकल्प, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ.सं.33
2- प्रो. यशपाल, उदधृत अक्षर पर्व, मार्च 2004, नरेन का लेख
3- काशीनाथ सिंह, रेहन पर रग्घू, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ.सं.23
4- रवीन्द्र कालिया, ए.बी.सी.डी., वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004(मनोज कुमार पांडेय 'ए.बी.सी.डी.' के फ्लैप पर)
5- रणेन्द्र,ग्लोबल गांव के देवता,भारतीय ज्ञानपीठ ,2013,पृ.सं.26
6- मनोहर श्याम जोशी, क्याप, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001,पृ.सं.17

अजीत कुमार पटेल
शोधार्थी (हिंदी विभाग) , राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय , किशनगढ़, अजमेर.